ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 128-130

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास : अभिव्यंजना शिल्प

जय मंगल प्रसाद यादव

शोध अध्येता –हिन्दी विभाग स्वामी सहजानन्द पी0जी0 कालेज, गाजीपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 24.02.2020, Revised- 28.02.2020, Accepted - 03.03.2020 E-mail: prayagrajinstitute94@gmail.com

सारांश : ***भाषा मानवीय भावों और विचारों की अभिव्यक्ति है। भाषा को प्रत्येक मानव समाज परम्परा से अर्जित करता है। डॉ॰ राम प्रकाश के अनुसार ''भाषा शब्द की संरचना संस्कृत की 'भाष' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'बोलना'। इस आधार पर भाषा का अर्थ हुआ बोली गयी या बोली जाने वाली। तात्पर्य यह है कि भाषा वह है जो बोली जाती है।'' दूसरे विद्वान डॉ॰ गणपति चन्द्र गुप्त के अनुसार '' भाषा व्यक्त या कहने अथवा प्रकाशित होने का माध्यम अर्थात 'विचार व्यक्त करना' या 'मनोभावों' का प्रकाशित होना में जिस साधना से सम्पादित होते हैं, उसे भाषा कहा जाता है।'' दोनों परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि भाषा की मूल इकाई ध्वनि है। इस प्रकार पहले ध्वनि, ध्वनि से शब्द, शब्द से वाक्य और वाक्य से अर्थ तक की यह प्रक्रिया होता है। आज कला, शिल्प, दर्शन, साहित्य और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में मानव की उत्तरोत्तर प्रगति के मूल में भाषा ही है।***

कुंजीभूत शब्द– मानवीय भावों, अभिव्यक्ति,परम्परा, माध्यम, मनोभावों, प्रकाशित, साधना, सम्पादित,दर्शन,ध्वनि।

'भाषा' शब्द और अर्थ के संयोग से आकार ग्रहण करती है। 'शब्द' उसका 'शरीर' और 'अर्थ' उसकी 'आत्मा' कही जाएगी। उसका मूल कार्य सम्प्रेषण है। स्पष्ट है कि भाषा–सम्प्रेषण–व्यवस्था है जिसका सीधा सम्बन्ध संरचना से होता है 'संरचना' से सम्प्रेषण सम्भव है। इस प्रकार संरचना भाषा के रचनात्मक निर्माण की प्रक्रिया है। भाषा संरचना का स्परूप स्पष्ट करते हुए डॉ॰ राम प्रकाश जी ने कहा है कि ''किसी शब्द, पद बंध या वाक्य की सार्थक इकाइयों में निहित सम्बन्धों तथा व्याकरणिक नियमों पर आधारित व्यवस्था भाषिक संरचना कहलाती है।'' इस प्रकार भाषा संरचना का अभिप्राय है, उसकी अभिव्यक्ति की संरचना अर्थात शब्द संरचना। वाक्य संरचना में तीन तत्व अपेक्षित माने गए हैं–योग्यता, आकांक्षा और सन्निधि–समीपता। इस तरह भाषा संरचना की अपने आप में पूर्ण एवं सार्थक इकाई 'वाक्य' है। जैसे भाषा का प्रकार्य सम्प्रेषण है, तो सम्प्रेषण वाक्य के बिना असम्भव है, भाषिक संरचना किसी भाषा के शब्द या वाक्य के भीतर पाये जाने वाले सम्बन्धों की निर्धारित व्यवस्था है।

भाषा मुख्यतः सामाजिक वस्तु है। भाषा का प्रयोक्ता भी सामाजिक होता है। भाषा के सामाजिक सन्दर्भ अनेक होते हैं। भाषा वैविध्यपूर्ण होती है। भाषा वैविध्य में एक व्यवहारजन्य व्यवस्था रहती है साहित्यिक रचना भाषिक अभिव्यक्ति होती है, उसका सत्य, शिव और सुन्दरम् भाषा संरचना से सम्बन्धित होता है। अतः उस संरचना का अस्तित्व उसकी भाषा संरचना में होता है। डॉ॰ रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार–''किसी 'भाव' या 'विचार' को हम चाहे ध्वनियों के सहारे बोलकर व्यक्त करें अथवा लिपि के सहारे लिखकर रूप के धरातल पर वह भाशाबद्ध विचार एक रूप ही रहता है। संरचना का संम्बन्ध रूप से रहता है, अतः अभिव्यक्ति माध्यम के भेद से उसकी संरचना नही बदला करती है।'' साहित्यकार भाषा के माध्यम से किसी विशिष्ट देश, काल, समाज के परोक्ष–प्रत्यक्ष घटना–व्यापारों एवं मनोभावों का जिवंत चित्रण प्रस्तुत करते है। इस चित्रण का सम्पूर्ण वैशिष्टय भाषिक प्रयोगों की विविध भंगिमाओं पर निर्भर है।साहित्य कृति में भाषा प्रयोक्ता सिर्फ कुछ कहता नहीं बल्कि वह नया सृजन करता है। डॉ॰ राम प्रकाश जी के अनुसार–''भाषा के सर्जनात्मक प्रयोग का अभिप्राय है तथ्यों और सूचनाओं से आगे बढ़कर कुछ अतिरिक्त और विशेष की अभिव्यंजना, भाषा का सर्जनात्मक प्रयोग शब्दों वाक्यों का पूर्ण निश्चित अर्थ व्यक्त न करके उस अर्थ की व्यापकता के अन्तर्गत आनेवाले अनेक मिलते–जुलते भावों को व्यक्त करता है।''

साहित्य कृति में सामान्य अर्थ न होकर एक विशेष अर्थ का बोध होता है, जो हमारे अंतरतम तक छूता है। इसमें साहित्यकार भाषा को कच्चे माल की तरह ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य, अर्थ को लेकर उन्हें नया आयाम देता है। तथा उन्हें असामान्य बना देता है।

भाषा सामान्य क्षेत्र में बिखरी हुई अपार शब्द सम्पदा से प्रसंगानुकूल विशिष्ट चयन, विशिष्ट संगठन एवं विशिष्ट संरचना के आधार पर साहित्यकार लोक प्रचलित प्रतिमानों से विपथन करता हुआ शैली चमत्कार का निर्माण करता है। वस्तुतः भाषिक संरचना का आकर्षण ही किसी साहित्य रचना के प्रति पाठक कूतुहल जाग्रत करता है।

उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का अनेक भाषाओं पर अधिकार है, अवधी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी आदि। मगर उनका गद्य हिन्दी का विशुद्ध गद्य है। वे हिन्दी गद्य

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

की ठेठ जातीय परम्परा के प्रति उत्तरदायी और आत्मसजग हैं। डॉ॰ परमानंद श्रीवास्तव के अनुसार–''श्रीलाल शुक्ल एक सार्थक जटिल और अंधेरी दुनिया को चित्रित करने के लिए भी वे सीधी स्पष्ट भाषा के विन्यास पर निर्भर हैं। जान–बूझकर जटिल बनाई गयी भाशा पर श्रीलाल शुक्ल का सख्त ऐतराज जाना पहचाना है, यद्यपि विन्यास या लहजे में वक्रता विदग्धता उनका अपना कौशल है। शुद्ध साधारण, गहन और उदात्त जहाँ मिलते हैं, वही है ''श्रीलाल शुक्ल की औपन्यासिकता का बीजभाव'' इस तरह अपनी भाषा के माध्यम से लेखक जब ईमानदार होगा तो सच्चा यथार्थ, संवेदनशीलता के साथ अपनी भाषा में दर्ज करेगा।

श्रीलाल शुक्ल का जीवन क्षेत्र विस्तृत है, अनेक भौगोलिक क्षेत्रों, प्रदेशों से सम्बन्धित है। इसलिए उनकी भाषा में वैविध्य है। वे जिस जमीन का यथार्थ व्यक्त करना चाहते है। तो उसे उस प्रदेश की भाषा में ही अभिव्यक्त करते है, उनके उपन्यासों में भाषा के अनेक सर्जनात्मक प्रयोग प्रस्तुत है। उर्मिल कुमार थपलियाल के अनुसार–''उनमें भाषा का शालीन संस्कार है। सूक्तियुक्त टिप्पणियों या टकसाली मुहावरों से श्रीलाल शुक्ल सतर्क रहे हैं। वे चौकन्ने रहे हैं कि उनका कहा कोरा स्टेटमेन्ट न लगे। दरअसल वे अपने समय, समाज और परिवेश के ऋणी है, जो उनकी रचनाओं को कच्चा नहीं, बल्कि पका–पकाया माल देता है। उनके पास तो केवल परोसने की कला का कौशल है। वे व्यंग्य को न्योता नही देते। वह उनकी रचनाओं में खुद चला आता है।''

श्रीलाल जी ने पात्रों के चरित्र, मानसिकता, सामाजिक स्तर सामाजिक संबंध आदि के अनुसार पात्रों की भाषा प्रयुक्त किये हैं। उन्होंने परिवेश को महत्व देकर उसे यथार्थानुकूल भाषा द्वारा प्रस्तुत किया है। जिससे पात्रों के शैक्षिक स्तर, संस्कृति, पदाधिकार आदि का परिचय मिलता है। आप ने 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में अमजद अली रामदास को भूत–प्रेत के बारे में बताता है जिससे उसके भीतर गहरा बैठा अन्धविश्वास व्यक्त होता है। ''बरमराक्षस लग जाए, पर खबीस से किसी का पाला न पड़े। एक बार तो एक खबीस मुझे भी रास्ते में मिल गया। मैं चच्चा के गाँव से अकेला लौट रहा था––––––।'' इस प्रकार ग्रामीण पात्र अंधविश्वास को महत्व देते हैं।

'अज्ञातवास' उपन्यास में गंगाधर एण्ड कम्पनी को ग्रामीण गानेवाले लोगों से गीत सुनते हुए आनन्द आता है, पर उनके मुँह से बदबू आती है, तब गाने वाले ने कहा ''ठीक बात है सरकार, हम लोग गँवार आदमी, कायदा–बेकायदा क्या समझे? मगर सरकार, मर्द बच्चा की आवाज चार कोस तक चली गई तो कौन सा हर्ज हो गया?'' इससे ग्रामीण जीवन में लोगों का स्तर तथा उनके शोषण का चित्र स्पष्ट है।

'रागदरबारी' उपन्यास में श्रमिक वर्ग का रिक्शा वाला प्रस्तुत है। उसकी भाषा है–''ये गोंडा–बहराइच और इधर–उधर के रिक्शा वाले आकर यहाँ का चलन बिगाड़ते हैं। दायें–बायें की तमीज नहीं। इनसे ज्यादा समझदार तो भूसा–गाड़ियों के बैल होते हैं। बिल्कुल हूश हैं। अंगेजी बाजारों में बिरहा गाते निकलते हैं। मोची तक को रिक्शे पर बैठाकर उसे हुजूर, सरकार कहते हैं।'' इस तरह रिक्शा वाले के माध्यम से रिक्शा व्यवसाय करने वाले की मानसिकता एवं सामाजिक स्थिति उनकी भाषा द्वारा स्पष्ट की है। स्थानीय रिक्शा वाला बाहर से आने वाले रिक्शा वालों को हिकारत भरी नजर से देखते हैं।

'पहला पड़ाव' उपन्यास में मकान पर काम करने वाली मजदूरिन जसोदा की भाषा–''मिस्त्री, बोल दिया है। पीछे न पड़ों, नही तो उठकर तुम्हारी वसूली तुम्हारे मुँह में ठूँस दूँगी।'' इससे जसोदा की हिम्मत और मजबूरी गरीबी में भी लाचार को बनाये रखने की नैतिक दृढ़ता मिस्त्री की दी गयी धमकी से प्रकट होती है।

'विश्रामपुर का संत' उपन्यास में मुख्यमंत्री की राजनीतिक भाषा स्पष्ट है–''बजट अधिवेशन में कुछ ही दिन रह गये हैं। संयुक्त विधानमण्डल को संबोधित करते समय महाहिम को बिल्कुल स्वस्थ्य होना चाहिए। सड़े टमाटर और अंडो का डर नहीं है, पर विपक्ष के पास कागजों का पुलिंदा भी वजनी होगा। यहाँ मुख्यमन्त्री का विपक्ष के प्रति भय स्पष्ट है।

इस तरह पात्रों की भाषा पात्रानुकूल है। यह भाषा पात्रों की मानसिकता को व्यक्त करती है। उनके व्यावसायों का व्यावसायिक प्रवृत्तियों का परिचय देती है। इस प्रकार पात्रानुकूल भाषा द्वारा एक और पात्र का व्यक्तित्व निर्माण होता है। तो दूसरी और विषयवस्तु और कथ्य के अनुकूल परिवेश तथा स्थितियों का निर्माण भी होता है। जब रचनाकार शब्द स्तर भाषा की मानक व्यवस्था को तोड़ता है, वहाँ शब्दस्तरीय विचलन साभिप्राय हो उठता है। और उसके द्वारा किया गया, शब्दस्तरीय विशिष्ट प्रयोग अग्रप्रस्तुत होकर कथ्योन्मेश में सहायक सिद्ध होता है।

उदाहरण द्रष्टव्य है– ''पूरे गाँव में चोरी की चर्चा है। जागते हुये सोना चाहिए। यह शब्दस्तरीय विचलित प्रयोग है। इसमें जागने के लिए या सावधानी बरतने के लिए जागते हुए सोने का विचलन है। शब्द स्तरीय समांतरता की दो दिशाएँ खुलती हैं, समतामूलक एवं विरोधमूलक समांतरता, समतामूलक समांतरता का उदाहरण प्रस्तुत है–''एक लौंडिया–दुबली–पतली, काली–काली थी, तब

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

तुम सो रहे थे, वह आयी और पूछकर चली गयी।'' इसमें दूबली–पतली, काली–काली शब्द का समांतरित प्रयोग एक लड़की के शरीर तथा वर्ण के लिए प्रस्तुत है।

''विश्रामपुर का संत' उपन्यास में कुँवर जयंती प्रसाद सिंह जयश्री को पत्र लिखकर उसके सौन्दर्य के प्रति अपनी भावना व्यक्त करता है–

''तुम्हारी यह मादक चितवन,
तुम्हारी यह सलज्ज मुस्कान।
छिपायें मूक प्रश्न क्या? क्यों?
विकल मैं एकाकी अनजान।''

यहाँ उत्प्रेक्षा काव्यालंकार के माध्यम से कुँवर जयंती प्रसाद का स्वच्छंद, रूमानी, कामुक स्वभाव व्यक्त हुआ है।

श्रीलाल शुक्ल जी ने औपन्यासिक कथ्य की अभिव्यक्ति को कम शब्दों में सारगर्भित एवं प्रभावपूर्ण ढ़ंग से कहने के प्रयोजन से उपन्यासों की भाषा में कहावतों का प्रयोग किया है।

यथा–बाप न मारी मेढ़की, बेटा तीरंदाज।
जे करे सेवा, सो खाए मेवा। (सूनी घाटी का सूरज)
तने में नही लत्ता, पान खाये अलबत्ता (अज्ञातवास)
चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाय।
मुँह में राम बगल में छुरी।
मेढ़ें को जुकाम हुआ है।
अंधेर नगरी चौपट राजा। (रागदरबारी)
एक अनार सौ विमार। (मकान)

सूक्ति में व्यंगात्मक प्रयोग–

उधर देखती है, इधर देखती है,
न जाने किधर से, किधर देखती है।

गीत गजल का शब्दस्तरीय सूक्ति के रूप में विचलन–

तेरी बातों से जाहिर मुझे यह हुआ,
इश्क तेरा रहा किसी कंगाल से।
आये थे हँसते–खेलते, मयखाने में फिराक
जब पी चुकें शराब तो संजीदा हो गये।

श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यासों में शैलीगत प्रयोगों का वैविध्य दिखाई देता है। शैली विचारों का परिधान है। उपन्यास में शैली का वही स्थान है जो मनुष्य में उसकी आकृति और वेशभूषा का है। 'शैली' के निम्नांकित गुण है– आकर्षकता, रोचकता, सरलता और प्रवाह पूर्णता।

श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यासों से स्पष्ट है कि वर्तमान जीवन में व्यवस्था ताकतवर है, यही आज का यथार्थ है। परिवेश एवं पात्रों के संघर्ष में यथार्थ का निर्वाह किया है। लोकतन्त्र की हमारी व्यवस्था में आजादी के बाद जिस तेजी के साथ पूँजीपतियों का वर्चस्व, सत्ता समाज में बढ़ा है। उससे भ्रश्टाचार एवं सिद्धान्तहीनता बढ़ी है।इसी के साथ लेखक ने आम आदमी की संकटापन्न सामाजिकता का उद्घाटन उपन्यासों में किया हैं। लेखक की चेतना में सामाजिक सरोकार की पक्षधरता के औजार सचमुच नये हैं। आपके उपन्यासों की विषयवस्तु में विविधता है, साथ–साथ उपन्यासों की रूप और भाषा भी अनूठी है। लेखन यथार्थ के जटिल रूपों की आलोचनात्मक समझ के लिए व्यंग्य की भी सर्जना की हैं।

अतः श्रीलाल शुक्ल जी अपने उपन्यास साहित्य के माध्यम से आम आदमी का पक्षधर बनकर नवजागरण लाना चाहते हैं। वे टूटे मूल्यों की स्थापना के आग्रही हैं। ग्रामीण ठेठ जातीय, कभी गंवार, कभी व्यंग्य, यथार्थ, विवेचनात्मक तथा मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों और अलंकारों के सटीक प्रयोग की प्रवृत्ति उनकी भाषा की बहुत बड़ी विशेषता है। पात्र की जाति, धर्म, वर्ण, शिक्षास्तर, परिवेश आदि के अनुरूप उनकी भाषा का निर्माण कर हिन्दी भाषा को नया मुहावरा, श्रीलाल शुक्ल जी ने प्रदान किया है। वे यथार्थ के रचानाकार, यथार्थ के मर्मज्ञ मानवता के आग्रही साहित्यकार हैं। श्रीलाल शुक्ल जी की इन विशेषताओं ने उनके औपन्यासिक–शिल्प को विशिष्ट रूप प्रदान किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मानक हिन्दीः संरचना एवं प्रयोग – राम प्रकाश, पेज न॰–11।
2. पूर्ववत्– पेज न॰–25।
3. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका–डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय, पेज न॰–24।
4. मानक हिन्दीः संरचना एवं प्रयोग– राम प्रकाश, पेज न॰–106।
5. सूनी घाटी का सूरज– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–34
6. अज्ञातवास– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–47।
7. राग दरबारी– श्रीलाल शुक्ल पेज न॰–39।
8. आदमी का जहर– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–31।
9. सीमाऐं टूटती है– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–107।
10. मकान– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–52।
11. पहला पड़ाव– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–41।
12. विश्रामपुर का संत– श्रीलाल शुक्ल, पेज न॰–12।
13. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान –डॉ॰ पी॰ वी॰ कोटमे, पेज न॰–254।

*****